

डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 12, मार्क 6:45-7:23, पानी पर चलना, मानव परंपराएँ

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह मार्क 6:45-7:23 पर सत्र 12 है। पानी पर चलना, मानवीय परंपराएँ।

मैं आपके साथ फिर से जुड़ने जा रहा हूँ क्योंकि हम यहाँ मार्क के सुसमाचार पर काम करना जारी रखते हैं, विशेष रूप से मार्क अध्याय 6 पर। हमने अभी मार्क अध्याय 6 में जो देखा है, हम बारह लोगों को भेजने के बारे में बात कर रहे हैं और कैसे बारह, प्रेरित, अद्भुत चीजें करने में सक्षम हैं। और फिर जॉन बैपटिस्ट के सिर काटने के बारे में मार्क की चर्चा के बाद बारह की वापसी, बारह की वापसी, और 5,000 लोगों को खिलाने की व्यवस्था, जहाँ यीशु शिष्यों को निर्देश देते हैं, जो अभी यीशु के अधिकार के साथ अद्भुत चीजें कर रहे थे, कि वे उनकी देखभाल करें, ताकि वे एक तरह से, अगर आप चाहें तो, वहाँ मौजूद लोगों के लिए अधीनस्थ चरवाहे बन सकें। और वे किसी भी मानवीय मामले से परे किसी भी तरह से इसके बारे में सोचने में असमर्थ हैं, किसी भी तरह से कि इन सभी लोगों को खिलाने के लिए कितना पैसा लगेगा।

इसलिए, वे मानवीय चिंताओं में चीजों के बारे में सोच रहे हैं, उसी तरह जैसे हेरोदेस एंटीपस जॉन बैपटिस्ट की स्थिति के बारे में मानवीय चिंताओं में चीजों के बारे में सोच रहा था। और इसलिए, यीशु एक चरवाहे के रूप में यह चमत्कार करता है, 5,000 पुरुषों और महिलाओं और बच्चों को यह चमत्कारी भोजन खिलाता है। और जैसा कि हमने बात की, केवल शिष्यों ने ही उस चमत्कार को देखा होगा।

मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है क्योंकि हम इस बिंदु पर शिष्यों के बारे में जो जानते हैं उसे निर्धारित करते हैं। हम जानते हैं कि उन्होंने खुद भी अद्भुत काम किए हैं, और उन्होंने कई चीजों की सूची में कुछ अद्भुत देखा है, जो उन्होंने देखी हैं। यह यीशु के सबसे प्रसिद्ध चमत्कारों में से एक के लिए मंच तैयार करता है, और यहाँ अध्याय 6 समाप्त हो जाएगा; उसके बाद संक्षेप में एक सारांश कथन है, जो पानी पर चलना है। मुझे लगता है कि जब हम इसे देखते हैं तो मुख्य विचार यह है कि इस घटना और झील पर हुई दूसरी चमत्कार घटना के बीच कुछ समानताएँ हैं, जो तूफान का शांत होना था।

दोनों ही स्थितियों में, हमारे पास हवा होगी, और हवा का तुरंत रुक जाना भी होगा। हमें यीशु के बारे में एक रहस्योद्घाटन भी मिलेगा, जो उसके दिव्य स्वभाव का एक आत्म-चित्रण है। अय्यूब 9:8 की टिप्पणियाँ अक्सर यहाँ टिप्पणी करती हैं कि परमेश्वर समुद्र की लहरों पर चलता है।

यह इस घटना का एक हिस्सा है। तो, हम इसे श्लोक 45 से शुरू करते हैं। तो, यह भोजन कराने के बाद की बात है।

यीशु ने तुरंत अपने शिष्यों को नाव में बिठाया और भीड़ को विदा करते हुए बेथसैदा की ओर उनके आगे चले गए। उन्हें छोड़कर, वह प्रार्थना करने के लिए पहाड़ की ढलान पर चले गए, श्लोक 45 और 46। शायद यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भौगोलिक रूप से यहाँ क्या हो रहा होगा, क्योंकि यह पहली बार में थोड़ा अजीब लगता है, क्योंकि वह उन्हें नाव पर बेथसैदा भेजता है, जो जॉर्डन नदी के ठीक पूर्व में होगा।

लेकिन वह वास्तव में उनसे तब मिलेंगे जब वे पश्चिम की ओर जा रहे होंगे, जब वे गेनेसरेट और कफरनहूम के क्षेत्र में जा रहे होंगे। एक सवाल यह है कि यह कैसे संभव है कि उन्हें पूर्व की ओर जाने का निर्देश दिया गया है, फिर भी यीशु उनसे पश्चिम की ओर जाने वाली नाव पर मिलते हैं? और मुझे लगता है कि इसका सबसे अच्छा अर्थ यह है कि हमारे पास यहां निर्देशों का पूरा सेट नहीं है। वह उन्हें बेथसैदा जाने और फिर उसके बाद, खासकर अगर वह नहीं पहुंचता है, तो पश्चिम की ओर पार करना शुरू करने का निर्देश देता है।

मुझे लगता है कि यह समझने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि यह कैसे होता है। अब, वह उनके साथ नहीं जाना चाहता। वह प्रार्थना करने के लिए दूर जाना चाहता है।

यह पहली बार नहीं है जब यीशु अकेले प्रार्थना करने के लिए चले गए। और अकेले प्रार्थना करने के बाद, जब शाम हुई, तो हम कहानी को आगे बढ़ाते हैं, नाव झील के बीच में थी, और वह जमीन पर अकेले थे। तो, हमें यह समय आंदोलन मिला है।

हम जानते हैं कि नाव कहाँ है, और वह नाव के पास कहीं नहीं है। वह ज़मीन पर अकेला है। और उसने देखा कि शिष्य नाव को चलाने में बहुत मेहनत कर रहे हैं क्योंकि हवा उनके खिलाफ़ थी।

रात के चौथे पहर के करीब, वह झील पर चलते हुए उनके पास गया। तो, सबसे पहले, हमें यह स्पष्ट समझ मिलती है कि यीशु ने संकट को देखा। यह तूफान के पलटने और पानी के भर जाने के कारण होने वाला संकट नहीं है, बल्कि यह है कि वे इस झील को पार करने की कोशिश कर रहे हैं और ऐसा करने में असमर्थ हैं।

और इसलिए इसे यहाँ प्रेरणा के रूप में पढ़ा जाता है। यहाँ आधी रात को, रात के चौथे पहर में, वह वहाँ क्या देखता है, और मुझे लगता है कि यह दिलचस्प है कि वह आधी रात को कुछ देख रहा है जो घटित हो रहा है। क्या यह बहुत उज्वल चाँदनी की वजह से है? क्या यह अलौकिक दृष्टि की वजह से है? हम वास्तव में नहीं जानते।

लेकिन वह बाहर जाता है, और वह पानी पर चल रहा है। यहाँ मुझे लगता है कि न केवल अय्यूब 9:8, यशायाह 43:16, भजन 77:19, पानी पर चलने वाले भगवान की भाषा के इन सभी विचारों के बारे में सोचना महत्वपूर्ण है, बल्कि, मुझे लगता है, निर्गमन की कहानी भी खेल में आती है। हमने अभी जंगल में भोजन किया है।

हमारे पास मूसा के रूपांकन हैं। हम निर्गमन 33:18 की भाषा को देखने जा रहे हैं, मुझे लगता है, यहाँ भी थोड़ा सा ऊपर आएगा। लेकिन जब मूसा को समुद्र पार करने की ज़रूरत थी, तो इसके लिए परमेश्वर को पानी को अलग करना पड़ा ताकि मूसा और इस्राएली ज़मीन पर चल सकें।

मूसा और इस्राएली समुद्र को पानी पर पार करने में सक्षम नहीं थे। परमेश्वर को पानी को अलग करना पड़ा क्योंकि मनुष्य के रूप में, वे केवल ज़मीन पर चल सकते थे। फिर भी यहाँ, यीशु को पानी पार करने के लिए किसी भी पानी को अलग करने की आवश्यकता नहीं है।

वह लहरों पर चलने में सक्षम है। गुरुत्वाकर्षण के नियम जो उसे डूबने के लिए बाध्य करते हैं, यहाँ काम नहीं करते। वह वही करता है जो भगवान कर सकता है, यानी पानी पर चलना।

अब, शब्दावली बहुत रोचक है। वह उनके पास जाता है क्योंकि वह देखता है कि वे पतवार चलाने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं क्योंकि हवा उनके खिलाफ है। लेकिन फिर मार्क श्लोक 48 के अंत में कहता है कि वह उनके पास से गुजरने वाला था।

खैर, यह कैसे काम करता है? वह उनके पास से कैसे गुजरने वाला था? उनके तनाव के अनुरूप, मैं उनके पास जाऊँगा। और मुझे लगता है कि उनके पास से गुजरने वाला, यह वाक्यांश मार्क का तरीका है जो यीशु में दिए जा रहे दिव्य पहचान संदेश को इंगित करता है। निर्गमन 33, 18 के बारे में सोचें, जब मूसा ने परमेश्वर से अपनी महिमा दिखाने के लिए कहा, और परमेश्वर उसके पास से गुजरा। या 1 राजा 19 में, जब परमेश्वर कहता है कि वह एलिय्याह के पास से गुजरने वाला है।

मुझे लगता है कि इस पास-बाय भाषा का इस्तेमाल मानवीय धारणा द्वारा दिव्य गुजरने को पकड़ने के लिए किया जाता है। मेरा मानना है कि यह कम से कम इसका एक संकेत है। और शायद आगे जो होता है उससे यह और भी मजबूत हो जाता है।

इसलिए, जब उन्होंने उसे झील पर चलते हुए देखा, तो उन्हें लगा कि वह कोई भूत है, यीशु का भूत नहीं, बल्कि किसी तरह की प्रेतात्मा। वे यहाँ यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि यह आदमी कैसे चल रहा है। वे चिल्ला उठे क्योंकि उन्होंने उसे देखा और डर गए।

फिर से, आतंक का यह भाव सामने आता है। तुरंत, उसने उनसे बात की और कहा, हिम्मत रखो; यह मैं हूँ, डरो मत। और मुझे इस पर आश्चर्य है, यह मैं भाषा है, जिसका ग्रीक में एगो इमी होगा।

इसका ग्रीक अनुवाद सबसे सही ढंग से किया जा सकता है, यह मैं है, लेकिन इसका अनुवाद मैं हूँ भी किया जा सकता है। खैर, अगर यह बाद वाला है, तो मैं हूँ, अगर यह कहने का पसंदीदा तरीका है, तो यह तुरंत निर्गमन 3 और ईश्वर के दिव्य नाम के रहस्योद्घाटन को सामने लाता है, मैं वही हूँ जो मैं हूँ। अब यह बात को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना हो सकता है।

अगर मैं जॉन के सुसमाचार पर काम कर रहा होता, तो मैं इस बात को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहता। जॉन ने इसे स्पष्ट किया है। यहाँ यह संभव है कि मैं इसे बहुत ज़्यादा पढ़ रहा हूँ, क्योंकि वह कहता है, डरो मत।

आम तौर पर, डर ईश्वर की पहचान के प्रति सही प्रतिक्रिया से जुड़ा होता है। लेकिन इसका कम से कम एक संकेत देखना मुश्किल है, क्योंकि बाकी सब कुछ पानी पर चलने में हो रहा है, जो कि

केवल ईश्वरीय शक्ति ही कर सकती है, यहाँ तक कि शायद पास से गुजरना भी। कम से कम इसका सूक्ष्म या प्रतिध्वनि उल्लेख देखना मुश्किल है।

दिलचस्प बात यह है कि उनकी चिंता यह थी कि वे हवा के खिलाफ संघर्ष कर रहे थे। वह उनसे कहता है कि डरो मत, हिम्मत रखो। वह उनके साथ नाव में चढ़ गया, और क्या हुआ? हवा शांत हो गई।

समस्या का कारण रुक गया, और इसका अर्थ है कि तत्काल रुक जाना, ठीक उसी तरह जैसे जब उसने हवाओं और लहरों को डांटा था। विद्वानों ने सोचा है कि क्या हवा का कोई उद्देश्यपूर्ण डिज़ाइन था कि भगवान ने रहस्योद्घाटन के लिए संघर्ष का कारण बनने के लिए हवा को व्यवस्थित किया था। और, ज़ाहिर है, कुछ भी भगवान की भविष्यवाणी से परे नहीं है।

लेकिन कहानी इसमें नहीं है, और मुझे लगता है क्योंकि यह केवल यीशु की पहचान के बारे में नहीं है। कहानी इसमें नहीं है। यह बहुत जानकारीपूर्ण है क्योंकि हम इस दृष्टिकोण में आगे बढ़ रहे हैं, क्योंकि हम अब गंभीरता से मार्क अध्याय 8 के करीब पहुंच रहे हैं।

ध्यान दें कि जब वह अंदर जाता है और हवा शांत हो जाती है, तो यहाँ पद 51 में शिष्यों के बारे में क्या कहा गया है? वे पूरी तरह से चकित थे, क्योंकि वे रोटियों के बारे में नहीं समझ पाए थे। उनके दिल कठोर हो गए थे। उस वाक्यांश पर ध्यान दें।

वे पूरी तरह से चकित थे। यह एक ऐसी विशेषता है जिसे हम भीड़ से जोड़ते हैं। जब भीड़ कोई चमत्कारी चीज़ देखती है, तो वे चकित हो जाते हैं।

यह एक ऐसी विशेषता है जो शिष्यों को भीड़ के साथ थोड़ा और संरेखित करती है। वास्तव में, जो बात इसे और मजबूत करती है वह यह है कि रोटियों के बारे में समझ के विपरीत विस्मय को रखा गया है। तो रोटियों का जो भी मतलब था, और अगर इसका मतलब मूसा की इस छवि को संप्रेषित करना था, जिसके पास मूसा से भी बड़ा पैगंबर है, जो आने वाला था, अपेक्षित युगांतिक पैगंबर, मसीहाई भोज।

अगर रोटियाँ और रोटियों का प्रावधान यह सब बताने के लिए था, तो वे इसे चूक गए। वे बस इस बात से हैरान हैं कि यीशु क्या कर सकता है। शायद वे यह संकेत दे रहे थे कि वे इस बात से हैरान थे कि यीशु 5,000 लोगों को खाना खिलाने में क्या कर सकता है।

वे यह नहीं समझ पाए कि प्रतीकात्मकता में और इसे चरवाहे से जोड़ने में और यह किस बात की ओर इशारा कर रहा था। और फिर हमें बताया गया है कि वे क्यों नहीं समझ पाए, क्योंकि उनके दिल कठोर हो गए थे।

अब, हमने कठोर हृदयों को फरीसियों और उन धार्मिक नेताओं के साथ जोड़ा है जिनके हृदय कठोर थे। वे यीशु को मारना चाहते थे या उसे नहीं समझते थे या उसके खिलाफ खड़े नहीं होते थे। इसलिए, यहाँ शिष्य, वही समूह जो दुष्टात्माओं पर यीशु के अधिकार में कार्य करने में सक्षम था, उसने वही संदेश सिखाया, चमत्कार किए, मरकुस हमें याद दिला रहा है कि वे यीशु के बारे

में अपनी समझ में भीड़ और फरीसियों के अधिक करीब हैं, न कि वे यीशु द्वारा सिखाई गई बातों, संदेश और दिखावट के बारे में अधिक करीब हैं।

यीशु के बारे में उनकी समझ फरीसियों की ओर झुकी हुई है, कि अभी भी वहाँ एक छिपाव है। अभी भी वहाँ एक कठोरता है। कि चीज़ों के बारे में उनकी समझ मानवीय निर्माण में है।

वे उन श्रेणियों के भीतर काम कर रहे हैं। वे भीड़ की तरह आश्चर्यचकित हैं, लेकिन अभी तक हम यीशु के बारे में सही समझ नहीं पा रहे हैं। और यहाँ तक कि यह कठोर भाषा, बेशक, निर्गमन की कल्पना।

तो, इस पूरी संरचना को इस्राएलियों के मिस्र से बाहर आने, भोजन करने, जंगल में भटकने और समुद्र पार करने की कहानी से सूचित किया गया है। अध्याय छह, तो, यह वास्तव में संक्षिप्त है, यहाँ एक सारांश कथन के साथ समाप्त होता है। जब वे पार हो गए, तो वे गेनेसरेट में उतरे और वहाँ लंगर डाला।

जैसे ही वे अपनी नाव से उतरे, लोगों ने यीशु को पहचान लिया। वे पूरे इलाके में दौड़े और बीमारों को खाटों पर लादकर जहाँ कहीं भी उन्होंने सुना कि वह है, वहाँ ले गए। और जहाँ कहीं भी वह गया, गाँवों, कस्बों और देहातों में, उन्होंने बीमारों को बाज़ारों में रख दिया।

उन्होंने उससे विनती की कि वह उसके लबादे के किनारे को भी छू ले, और जो कोई भी उन्हें छूता था, वह चंगा हो जाता था। और इसलिए, जैसा कि हम पाते रहे हैं, किसी विशेष घटना या विशेष स्थान पर जीवन कैसा दिखता था, इस बारे में ये सारांश कथन मिलते हैं। ठीक है, अब मैं अध्याय सात में जाना चाहूँगा।

और जैसा कि हम सातवें अध्याय में लगे हुए हैं, हम ध्यान में रख रहे हैं कि शिष्यों के बारे में अभी क्या कहा गया है, मानवीय परंपराओं के बारे में अभी क्या कहा गया है, फरीसियों के बारे में अभी क्या कहा गया है, इत्यादि। और मुझे लगता है कि इस पर गौर करना महत्वपूर्ण है। तो, सातवें अध्याय में पहला मुख्य प्रकरण एक संघर्ष प्रकरण है, श्लोक एक से 23 तक।

हमारे सामने टकराव है। मौखिक परंपरा को लेकर यीशु का फरीसियों से टकराव है। अब, इस और पिछले प्रकरणों के बीच कोई स्पष्ट संबंध नहीं है। हमारे पास वहाँ कोई स्पष्ट भौगोलिक संबंध नहीं है, लेकिन वैचारिक रूप से यह यीशु और फरीसियों के साथ उनकी बातचीत के बारे में जो हम देख रहे हैं, उससे मेल खाता है।

और जहाँ भी वह भीड़ के साथ जाता है, जहाँ भी चंगाई होती है और लोग आते हैं, वहाँ अक्सर फरीसी और धार्मिक नेता होते हैं जो चुनौती देते हैं। तो, यह जगह से बाहर नहीं है। मुझे वॉकथ्रू में थोड़ा सा शुरू करने दें।

यरूशलेम से आए फरीसी और कुछ कानून के शिक्षक यीशु के चारों ओर इकट्ठे हुए और उन्होंने देखा कि उनके कुछ शिष्य अशुद्ध और बिना धुले हाथों से भोजन कर रहे थे। संक्षेप में, फरीसी और सभी यहूदी तब तक नहीं खाते जब तक वे अपने हाथों को औपचारिक रूप से धो नहीं लेते,

वे बुजुर्गों की परंपरा का पालन करते हैं। जब वे बाज़ार से आते हैं, तो वे तब तक नहीं खाते जब तक वे धो नहीं लेते, और वे कई अन्य परंपराओं का पालन करते हैं, जैसे कि कप, घड़े और केतली धोना। शायद यहाँ संदर्भ स्थापित करने के लिए, एक यह है कि यह मार्क के सुसमाचार में धार्मिक नेताओं के साथ अन्य विवादास्पद घटनाओं के समान ही है, जहाँ धार्मिक नेता शिष्यों को कुछ करते हुए देखते हैं, और इसलिए अब वे इसके बारे में यीशु से संपर्क करने जा रहे हैं।

और शिष्य जो विशेष रूप से कर रहे हैं वह यह है कि वे बिना औपचारिक रूप से अपने हाथों को खाने के लिए तैयार किए ही खा रहे हैं। फिर, पद 3 से 4 में कोष्ठकीय टिप्पणी आकर्षक है। एक, यह काफी दिलचस्प है क्योंकि मार्क एक कोष्ठकीय टिप्पणी देता है। वह अपने पाठक को समझाता है कि वह किस बारे में बात कर रहा है, और यह दर्शाता है कि उसके श्रोताओं को शायद पहले से ही नहीं पता होगा, या कम से कम उसके श्रोताओं के एक हिस्से को इस संदर्भ की समझ नहीं होगी।

और इसलिए, वह इस प्रक्रिया में फरीसियों ने क्या बात की, वे किस बारे में बात कर रहे थे, इस बारे में कुछ जानकारी देना चाहता है। हालाँकि, हमें इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि फरीसी और सभी यहूदी तब तक खाना नहीं खाते जब तक कि वे अपने हाथों को औपचारिक रूप से धो न लें, जो कि बुजुर्गों की परंपरा को मानते हैं। इसलिए, यह औपचारिक धुलाई जिसके बारे में फरीसी अब यीशु से सवाल करने जा रहे हैं, वह कुछ ऐसा है जो मौखिक परंपरा और स्वच्छता की स्थिति के बारे में बुजुर्गों की शिक्षा में निहित है।

यह इस हद तक विस्तारित है कि वे तब तक नहीं खाते जब तक वे नहा न लें, और वे कई अन्य परंपराओं का पालन करते हैं, जैसे कि कप, घड़े और केतली धोना। तो, आपको इस परंपरा, इन पंथ प्रथाओं की संपूर्णता का एहसास होता है। ध्यान रखें कि यह इस विचार के भीतर है जहाँ फरीसियों ने देखा कि मंदिर में बर्तनों को संभालने के बारे में कानून में पुजारियों को जो आदेश दिए गए थे, वे सभी लोगों, सभी यहूदियों पर लागू होते हैं।

और इसलिए, इन पवित्रता कानूनों का विस्तार है। अब, जब हमने कुछ समय में फरीसियों को नहीं देखा था, तो फरीसी वास्तव में अध्याय तीन के बाद से दृश्य में नहीं थे, और यही बात शास्त्रियों के साथ भी थी। एक बात यह है कि हम जानते हैं कि वे यरूशलेम से आए हैं, और हमने पहले ही इस विरोध को स्थापित करना शुरू कर दिया है।

और इसलिए, यरूशलेम का यह समूह, ये फरीसी और ये धार्मिक नेता इस बात की ओर इशारा कर रहे हैं कि यह एक अशुद्ध कार्य है, अनुष्ठानिक स्वच्छता की कमी है जो आवश्यक थी। और, बेशक, कोई यह समझ सकता है कि क्यों फरीसी और धार्मिक नेता शायद निर्गमन 30 और 40 और लैव्यव्यवस्था 20 की पुरोहिती मांगों का विस्तार करके अनुष्ठानिक स्वच्छता को लक्षित कर रहे हैं क्योंकि हम इस समय अवधि में हैं जहाँ यहूदिया का गैर-यहूदी संस्कृति के साथ सामना मौलिक रूप से बढ़ गया है।

और इसलिए, यदि आप चाहें तो, जैसा कि एक टिप्पणीकार ने कहा है, शुद्ध और अशुद्ध के बीच एक गहरी खाई की आवश्यकता हो सकती है। इसलिए, हम इसे पाँचवें श्लोक में उठाते हैं।

इसलिए, फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक यीशु से पूछते हैं, आपके शिष्य अशुद्ध हाथों से अपना भोजन खाने के बजाय बड़ों की परंपरा के अनुसार क्यों नहीं रहते? अब, यीशु इस प्रश्न का उत्तर देते हैं।

और यीशु, कई मायनों में, बुजुर्गों की परंपरा और महत्व के इस मुद्दे पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं। बुजुर्गों की परंपरा मौखिक परंपरा है जिसे कानून को समझने में मदद करने के लिए स्थापित किया गया था। मिशनरी मौखिक परंपरा को टोरा के चारों ओर बाड़ कहते हैं।

यह सभी निहितार्थों पर विस्तार से प्रकाश डालता है। और जब यीशु जवाब देते हैं, तो वे वैसा ही जवाब देते हैं जैसा वे अक्सर धार्मिक नेताओं को देते हैं, शास्त्रों में कही गई बातों पर ध्यान देकर। उन्होंने उत्तर दिया कि यशायाह तुम्हारे बारे में सही था।

यशायाह ने तुम कपटियों के विषय में जो भविष्यवाणी की थी, वह सही थी। जैसा लिखा है, ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझसे दूर रहता है। वे व्यर्थ मेरी आराधना करते हैं। उनकी शिक्षाएँ मनुष्यों द्वारा सिखाई गई विधियाँ हैं।

मुझे लगता है कि यहाँ कुछ बिंदुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। सबसे पहले, यीशु ने इस प्रश्न का उत्तर दिया कि शिष्य क्यों बड़ों की परंपरा का पालन नहीं कर रहे हैं, यह कार्य का बचाव करने के लिए नहीं बल्कि प्रश्न के आधार पर आरोप लगाने के लिए है। वह फरीसियों, व्यवस्था के इन शिक्षकों, व्यवस्था के इन व्याख्याकारों का पता लगाता है, और वह कहता है, यशायाह ने तुम्हारे बारे में बात की थी जब वह यशायाह के दिनों के वर्तमान धार्मिक नेताओं की निंदा कर रहा था जो परमेश्वर का सम्मान नहीं कर रहे थे, जो पूजा तो कर रहे थे लेकिन सच्चे कारणों से नहीं, जो अपनी शिक्षाओं में केवल मानवीय शिक्षाएँ, मनुष्यों के नियम थे।

तो, ध्यान दें कि उन्होंने यहाँ इस समूह के साथ क्या किया है, जिन्होंने खुद को टोरा के पालन के विशेषज्ञ के रूप में पेश किया होगा, जो परंपरा के महत्व के विशेषज्ञ हैं, जो वे हैं जिन्होंने कहा होगा, हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि ईश्वर और कानून और उनके तरीकों के प्रति निरंतर प्रामाणिक भक्ति हो। उन्होंने कहा था, आप जानते हैं, जब यशायाह ने निर्वासन के बुरे लोगों से बात की, जो निर्वासन की ओर ले गए, धार्मिक नेतृत्व जो भ्रष्ट था, वह वास्तव में आपके बारे में भी बोल रहा था। खैर, हम इसे मार्क के सुसमाचार में देखते हैं, जहाँ यीशु वर्तमान धार्मिक नेताओं को लेता है और उन्हें अवज्ञाकारी इस्राएलियों, पुराने नियम के अवज्ञाकारी यहूदी लोगों के परिवार में रखता है, और उसने यहाँ भी ऐसा ही किया है।

पाखंडियों की भाषा भी आकर्षक है। वह उन्हें पाखंडी कहता है। यह इस समूह के लिए यीशु का एक आम अपमान है।

अन्य सुसमाचारों में भी यीशु अक्सर कहते हैं, अरे कपटियों। अब, यह शब्द पाखंडी, इस विचार को दर्शाता है। यह वास्तव में इसी अर्थ से उत्पन्न होता है और इसी को आगे ले जाता है।

यह प्राचीन ग्रीक में था और यहाँ से पहले ग्रीक की तरह था, और यह एक अभिनेता के लिए शब्द होता था, जो एक व्यक्तित्व बनाता है और ऐसा तालियों के लिए करता है, मनोरंजन के लिए

करता है, जिसे आप वास्तव में मैथ्यू में बहुत स्पष्ट रूप से देखते हैं, जहाँ आप पाखंडी हैं, और फिर वह विभिन्न धार्मिकों से गुजरता है, चाहे वह प्रार्थना हो या उपवास या दान देना, और धार्मिक नेताओं पर पाखंडी होने का आरोप लगाता है। वे मनुष्यों की प्रशंसा और प्रशंसा में अपना पुरस्कार प्राप्त करते हैं, लेकिन उन्हें स्वर्ग से पुरस्कार नहीं मिलेगा। वे अभिनेता का मूल भाव हैं, और मुझे लगता है कि यह बहुत उपयुक्त है क्योंकि इसमें एक व्यक्तित्व पर सार्वजनिक प्रशंसा का विचार है। मुझे लगता है कि यहाँ यह भी उचित है कि वह कहता है, तुम पाखंडी हो, तुम भगवान की धार्मिक शिक्षा प्रस्तुत करने का दावा करते हो, लेकिन तुम जो कर रहे हो वह वास्तव में यह दिखा रहा है कि तुम्हारी भक्ति ईश्वरीय चिंताओं के प्रति नहीं, बल्कि मानवीय, मर्दाना चिंताओं के प्रति है।

श्लोक 8 में तो यह बात स्पष्ट रूप से कही गई है। तुमने परमेश्वर की आज्ञाओं को छोड़ दिया है और मनुष्यों की परंपराओं को पकड़े हुए हो। इसलिए, वह उनके विरुद्ध यह आदेश जारी करता है।

ध्यान दें कि उन्होंने अभी तक इस प्रथा का बचाव नहीं किया है। उन्होंने बताया है कि सवाल पूछना ही फरीसियों और धार्मिक नेताओं के चरित्र का संकेत है, उसी तरह जैसे कि उनका यह आरोप कि यीशु पर भूत सवार था और वह बेलज़ेबुल के साथ गठबंधन में था, पवित्र आत्मा की निंदा करने की हद तक उनकी कठोरता का संकेत था। यहाँ वे मौखिक परंपरा पर चिंता के बारे में यह सवाल पूछ रहे हैं जो दर्शाता है कि उनकी प्राथमिकता कहाँ है।

और फिर वह एक उदाहरण देता है, और उसने उनसे कहा, तुम्हारे पास अपनी परंपरा का पालन करने के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं को अलग रखने का एक बढ़िया तरीका है। इसलिए, वह नियम में एक स्पष्ट तर्क देने वाला है जो उसके द्वारा अभी लगाए गए आरोप को सही ठहराता है। जिस तरह से मुझे लगता है कि ग्रीक दिलचस्प है, सटीक वाक्यांश जहाँ यह कहता है कि यशायाह सही था, वे शब्द उसी तरह हैं जैसे तुम्हारे पास अलग रखने का एक बढ़िया तरीका है।

तो, यहाँ शब्दावली की थोड़ी सी प्रतिध्वनि भी है। मूसा ने कहा, तो यहाँ वह यह आरोप लगा रहा है कि वे कैसे परमेश्वर के आदेशों का पालन नहीं करते। क्योंकि मूसा ने कहा, अपने पिता और अपनी माँ का आदर करो।

तो, हम यहाँ दस आज्ञाओं की बात कर रहे हैं। और जो कोई अपने पिता या माता को कोसता है, उसे अवश्य ही मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए। तो, यहाँ पाँचवीं आज्ञा की स्थापना की गई है, जो मूसा की आधारभूत आज्ञाओं में से एक है।

लेकिन आप कहते हैं कि अगर कोई व्यक्ति अपने पिता या माता से कहता है, कि जो भी मदद आपको मुझसे मिल सकती थी, वह कॉर्बिन है, यह ईश्वर को समर्पित एक उपहार है, तो आप उसे अपनी माँ, अपने पिता या माता के लिए कुछ भी करने नहीं देते। शायद हमें यहाँ हो रही कॉर्बिन आलोचना के बारे में थोड़ा सोचने की ज़रूरत है। तो, यहाँ जो प्रथा विकसित हो रही है वह लैव्यव्यवस्था 27, 28 और संख्या 18 और 14 के आसपास विकसित हो रही है।

भगवान को एक विशेष वस्तु समर्पित करने का यह विचार, भगवान के उद्देश्य के लिए कुछ अलग रखने का विचार। यह वास्तव में कॉर्बिन के इस विचार के बारे में नियमों और विनियमों की एक बड़ी चर्चा में विकसित हुआ। और अगर आप इसके बारे में सोचते हैं, तो कॉर्बिन कुछ हद तक वह बन गया जिसे हम आज विलंबित दान कहते हैं, जहाँ आप किसी संस्था को कुछ देते हैं, लेकिन आप अपनी मृत्यु तक उसका उपयोग करने के अधिकार बरकरार रखते हैं।

आप अधिकार अपने पास रखते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, मैं किसी स्थानीय कॉलेज को संपत्ति दे सकता हूँ, लेकिन मुझे उसमें रहने और उससे कमाई करने की अनुमति है। लेकिन मेरी मृत्यु के बाद, कॉलेज को संपत्ति मिल जाती है।

यह एक तरह का विलंबित दान है। और एक तरह से, कॉर्बिन के साथ यही हो रहा है। मुद्दा यह है कि कॉर्बिन का यह विचार, कि एक व्यक्ति सेवा और मंदिर के लिए कुछ अलग रखता है, अब बेटे के अपने माता-पिता की देखभाल करने के दायित्व को दरकिनार करने के तरीके के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है, ताकि वे अपने माता-पिता का सम्मान कर सकें।

और यह कि न केवल यह तंत्र लागू किया जा रहा था, बल्कि धार्मिक नेताओं द्वारा इसे वास्तव में मजबूत किया जा रहा था। इसका अर्थ यह है कि अब आप उसे अपने पिता या माता के लिए कुछ भी करने नहीं देते। इसलिए, यदि कोई पुत्र अपनी संपत्ति या अपनी संपत्ति के हिस्से को कॉर्बिन घोषित करता है, जिसका अर्थ है कि यह मंदिर का है, तो वह इसका उपयोग किसी और के लाभ के लिए नहीं कर सकता है, हालाँकि उसे अभी भी अपने लिए लाभ बनाए रखने की अनुमति है।

लेकिन वह माता और पिता से कहता है, जो अब अपना भरण-पोषण करने में असमर्थ हैं या उन्हें रहने के लिए जगह या काम की ज़रूरत है, कि बेटे को अब धार्मिक नेताओं द्वारा यह कहने की अनुमति दी जा रही है कि मैं आपकी मदद नहीं कर सकता। क्योंकि संपत्ति का यह टुकड़ा, मैं कहता हूँ, भगवान का है, भले ही मैं अभी भी इसका उपयोग करने और इसे रखने के अधिकार को बनाए रखने में सक्षम हूँ। वास्तव में, एक बार जब संपत्ति को कॉर्बिन के रूप में पेश किया जाता था, तो न केवल धार्मिक नेतृत्व ने कॉर्बिन को तोड़ने को हतोत्साहित किया, बल्कि जोसेफस के अनुसार, आपको वास्तव में कुछ भुगतान करना पड़ता था।

इसलिए, एक बार जब आपने कॉर्बिन जैसी कोई चीज़ समर्पित कर दी, तो आपको उसे वापस लेने के लिए पैसे देने पड़ते थे। यह इस तथ्य का एक स्पष्ट उदाहरण बन जाता है कि पिता और माता का सम्मान करने का इससे बड़ा कोई उदाहरण नहीं है कि उनकी देखभाल की जाए। फिर भी धार्मिक नेतृत्व न केवल इस कॉर्बिन नियम को अनुमति दे रहा है, जिसे वे शास्त्र की व्याख्या में निहित कर रहे हैं, बल्कि वे इसे मजबूत भी कर रहे हैं।

वे कॉर्बिन को अन्य दायित्वों से बचने का एक तरीका मान रहे हैं जो शायद उनके वित्तीय लाभ के लिए नहीं है। यह उनके पाखंड का इतना बड़ा उदाहरण बन जाता है कि लेविटस 27, नंबर 18 में विशेष वस्तुओं को प्रभु को समर्पित करने की प्रथा में दस आज्ञाओं को रद्द करने का विचार नहीं था। फिर भी उन्होंने ऐसा होने दिया है।

और फिर यीशु कहते हैं, इस प्रकार तुम अपनी परंपरा के द्वारा परमेश्वर के वचन को व्यर्थ कर देते हो, और तुम इस तरह के बहुत से काम करते हो। फिर से, यीशु ने भीड़ को अपने पास बुलाया और कहा, सब लोग मेरी बात सुनो। तो, यह चित्र दिखाता है कि उसने अभी-अभी कॉर्बिन के अपने अभ्यास की आलोचना की है।

इसमें कहा गया है, हे सब लोग मेरी बात सुनो, इसे समझो। बाहर की कोई भी चीज़ मनुष्य के अन्दर जाकर उसे अशुद्ध नहीं कर सकती। बल्कि, जो कुछ मनुष्य के अन्दर से निकलता है, वही उसे अशुद्ध बनाता है।

यह अब खाने वालों के हाथों की अशुद्धता के आरोप का उत्तर है। वे जो तर्क दे रहे थे, जो फरीसियों और यरूशलेम के धार्मिक नेता तर्क दे रहे थे, वह यह है कि शिष्य अपने हाथों से दूषित, अशुद्ध व्यवहार करके स्वच्छता के मामले में खुद को अशुद्ध कर रहे थे। और यह कि किसी तरह, वे अब परंपरा का उल्लंघन करके अशुद्ध हो रहे थे।

यीशु ने पाखंड और इस प्रेरणा को इंगित करने के बाद कि फरीसी वास्तव में इस बात से चिंतित नहीं हैं कि पवित्रशास्त्र शुद्ध और अशुद्ध तथा परमेश्वर की आज्ञाकारिता और परमेश्वर की आज्ञाकारिता के बारे में क्या कहता है, फिर मुड़कर कहा, यही कारण है कि यह अभ्यास ऐसा अभ्यास नहीं है जो परमेश्वर के इरादे को प्रकट करता है। फरीसी और धार्मिक नेता इस बात से परेशान हैं कि भोजन कैसे दूषित हो सकता है, या खाने की प्रक्रिया दूषित हो सकती है, लेकिन जो मुंह में जाता है वह अशुद्ध नहीं होता है, बल्कि जो बाहर आता है वह इसे प्रकट करता है। फरीसियों से जो निकलता है वह उनकी अशुद्धता को प्रकट करता है क्योंकि वे कॉर्बिन के इस अभ्यास की पुष्टि कर रहे हैं न कि शिष्यों के अंदर क्या जाता है, चाहे वे अपने हाथ धोएँ या नहीं।

जब वह भीड़ को छोड़कर घर में दाखिल हुआ, तो उसके शिष्यों ने उससे इस दृष्टांत के बारे में पूछा। क्या तुम इतने मंदबुद्धि हो? मुझे यह जवाब बहुत पसंद आया। उसने पूछा, क्या तुम इतने मंदबुद्धि हो?

क्या आप नहीं देखते कि बाहर से किसी व्यक्ति में प्रवेश करने वाली कोई भी चीज़ उसे अशुद्ध नहीं कर सकती? क्योंकि यह उसके हृदय में नहीं बल्कि उसके पेट में जाती है और फिर उसके शरीर से बाहर निकल जाती है। ऐसा कहते हुए, यीशु ने सभी खाद्य पदार्थों को शुद्ध घोषित किया। वह कोष्ठकीय टिप्पणी दिलचस्प है क्योंकि मुझे लगता है कि मार्क वहाँ, कई मायनों में, यीशु की शिक्षा का एक विस्तार दे रहा है जो प्रारंभिक चर्च द्वारा सिखाई जा रही बातों से मेल खाता है।

और इसलिए, आपके पास यीशु द्वारा सभी खाद्य पदार्थों को शुद्ध घोषित करने का इरादा नहीं है, लेकिन यदि यह बर्तन और हाथ धोने से नहीं है, और यह किसी को अशुद्ध नहीं बनाता है क्योंकि यह हृदय को प्रभावित नहीं करता है, तो यह वास्तव में भोजन की सामग्री, उसकी पहचान भी है। और इसलिए, मार्क यह इंगित कर रहा है कि पीटर अपने दर्शन से शिक्षा दे रहा था और पॉल शिक्षा दे रहा था, और हमने इस बारे में बात की कि कैसे मार्क संभवतः पॉल और पीटर का साथी था यदि हम लेखकत्व को सही ढंग से समझते हैं, कि पीटर जो कह रहा है और पॉल जो कह रहा

है और यीशु की शिक्षा के बीच एक संबंध है। कि यीशु, हालांकि उन्होंने कोषेर कानून के मामलों पर सीधे बात नहीं की, कि यह निश्चित रूप से लागू होता है।

उन्होंने आगे कहा कि मनुष्य के भीतर से जो निकलता है, वही उसे अशुद्ध बनाता है। तुम जानते हो, क्योंकि मनुष्य के हृदय के भीतर से बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, व्यभिचार, लोभ, द्वेष, छल, व्यभिचार, ईर्ष्या, निन्दा, अहंकार और मूर्खता निकलती है। और ये बुराइयाँ भीतर से आती हैं और मनुष्य को अशुद्ध बनाती हैं।

यह निश्चित रूप से धार्मिक नेताओं और यीशु के साथ शुद्धता के नियमों पर हमारे द्वारा किए जा रहे विवादों का ही एक सिलसिला है, और क्या किसी को अशुद्ध बनाता है और क्या उसे शुद्ध बनाता है। यीशु की शुद्धता शुद्धिकरण के कार्य के साथ कैसे जुड़ी है? और अब हमने देखा है कि अगर यह हृदय और आंतरिक के बारे में है, तो जब यीशु को शुद्ध कहा जाता है, और आपके पापों को क्षमा किया जाता है, तो उनके मन में मौखिक परंपरा के बाहरी नियम नहीं होते हैं कि वे पूरे हो चुके हैं, बल्कि हृदय का वास्तविक परिवर्तन होता है। हम सीरोफोनीशियन महिला के साथ मार्क के सुसमाचार में यीशु की कहानी को जारी रखेंगे और फिर अध्याय 8 में आगे बढ़ेंगे।

यह मार्क के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. मार्क जेनिंग्स हैं। यह मार्क 6:45-7:23 पर सत्र 12 है। पानी पर चलना, मानव परंपराएँ।